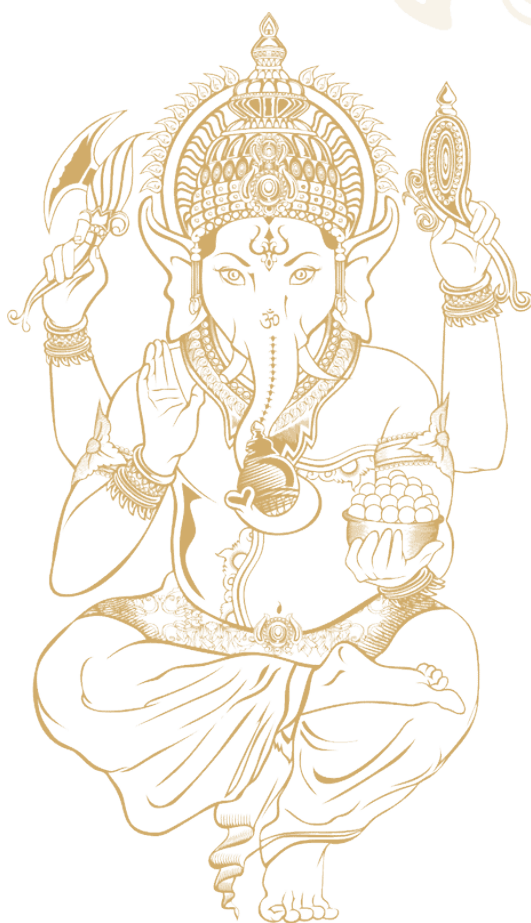




06 Mar 1989

03:00 AM

Rajauri

Model: Gem-Report

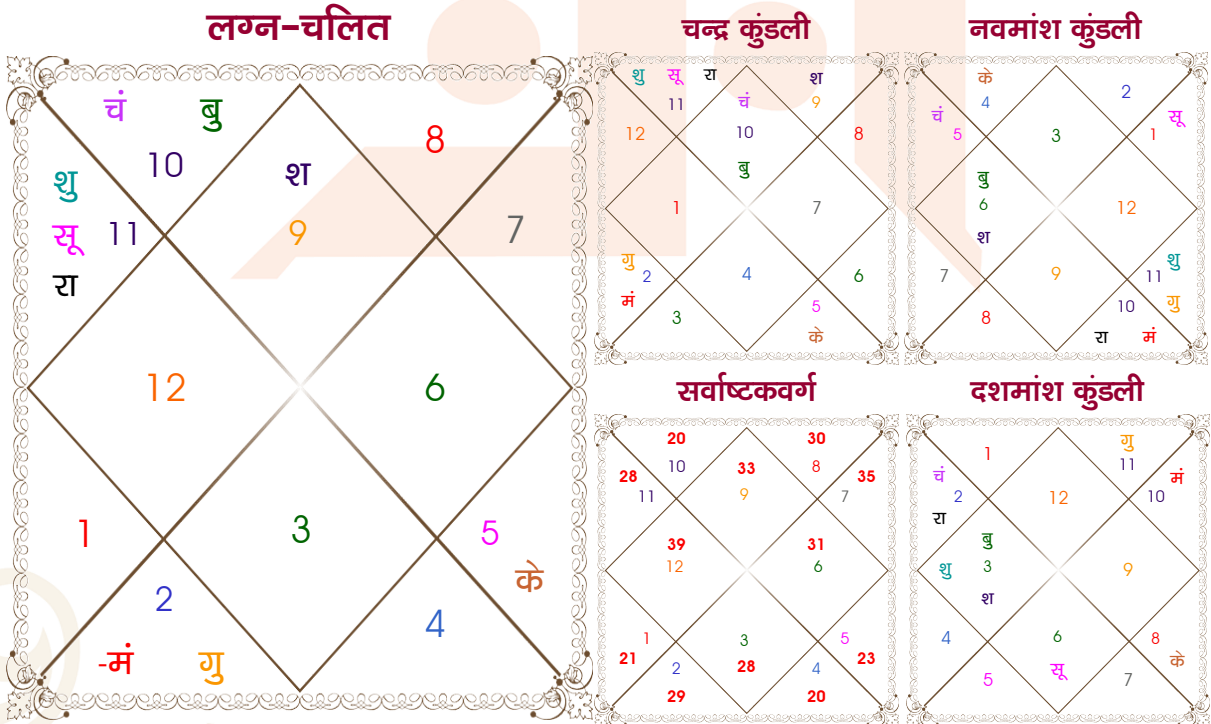
Order No: 120813101

तिथि 06/03/1989 समय 03:00:00 वार सोमवार स्थान Rajouri चित्रपक्षीय अयनांश : 23:42:29
अक्षांश 33:23:00 उत्तर रेखांश 74:18:00 पूर्व मध्य रेखांश 82:30:00 पूर्व स्थानिक संस्कार -00:32:48 घंटे

पंचांग	अवकहड़ा चक्र
साम्पातिक काल : 13:21:36 घं	गण : राक्षस
वेलान्तर : 00:11:20 घं	योनि : सिंह
सूर्योदय : 06:56:44 घं	नाडी : मध्य
सूर्यास्त : 18:32:26 घं	वर्ण : वैश्य
चैत्रादि संवत : 2045	वश्य : जलचर
शक संवत : 1910	वर्ग : मार्जार
मास : फाल्गुन	रैजा : अन्त्य
पक्ष : कृष्ण	हंसक : भूमि
तिथि : 13	जन्म नामाक्षर : गा-गगन
नक्षत्र : धनिष्ठा	पाया(रा.-न.) : रजत-ताम्र
योग : शिव	होरा : बुध
करण : वणिज	चौघड़िया : शुभ

विंशोत्तरी	योगिनी
मंगल 5वर्ष 10मा 12दि	पिंगला 1वर्ष 8मा 3दि
गुरु	पिंगला
16/01/2013	07/11/2024
16/01/2029	08/11/2026
गुरु 06/03/2015	पिंगला 18/12/2024
शनि 16/09/2017	धान्या 17/02/2025
बुध 23/12/2019	भामरी 09/05/2025
केतु 28/11/2020	भद्रिका 18/08/2025
शुक्र 30/07/2023	उल्का 18/12/2025
सूर्य 17/05/2024	सिद्धा 09/05/2026
चन्द्र 16/09/2025	संकटा 19/10/2026
मंगल 23/08/2026	मंगला 08/11/2026
राहु 16/01/2029	

ग्रह	व अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न		09:48:50	धनु	मूल	3	केतु	शनि	---	0:00			
सूर्य		21:34:52	कुंभ	पूर्वाषाढा	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.31	भातृ	पितृ	विपत
चंद्र		25:29:34	मक	धनिष्ठा	1	मंगल	राहु	सम राशि	1.29	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल		02:58:14	वृष	कृतिका	2	सूर्य	गुरु	सम राशि	1.62	कलत्र	भातृ	मित्र
बुध		29:00:01	मक	धनिष्ठा	2	मंगल	शनि	सम राशि	0.99	आत्मा	ज्ञाति	जन्म
गुरु		05:33:30	वृष	कृतिका	3	सूर्य	बुध	शत्रु राशि	0.86	ज्ञाति	धन	मित्र
शुक्र	अ	14:01:07	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	बुध	मित्र राशि	0.98	पुत्र	कलत्र	सम्पत
शनि		18:23:18	धनु	पूर्वाषाढा	2	शुक्र	राहु	सम राशि	1.29	मातृ	आयु	वध
राहु		11:11:27	कुंभ	शतभिषा	2	राहु	शनि	मित्र राशि	---		ज्ञान	सम्पत
केतु		11:11:27	सिंह	मघा	4	केतु	शनि	शत्रु राशि	---		मोक्ष	साधक

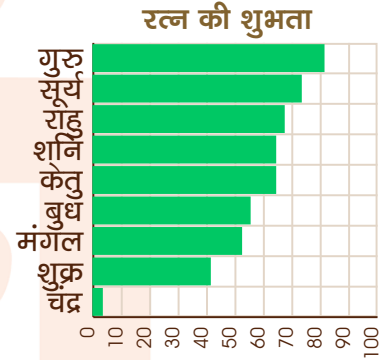


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	81%	शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य, सुख
माणिक्य	सूर्य	73%	पराक्रम, भाग्योदय
गोमेद	राहु	67%	पराक्रम, स्वास्थ्य
नीलम	शनि	64%	स्वास्थ्य, धन, पराक्रम
लहसुनिया	केतु	64%	भाग्योदय, पराक्रम
पन्ना	बुध	55%	धन, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
मूंगा	मंगल	52%	शत्रु व रोग मुक्ति, सन्तति सुख, कम खर्च
हीरा	शुक्र	41%	पराक्रम हानि, शत्रु व रोग, हानि
मोती	चंद्र	3%	धन हानि, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मंगल	16/01/1995	80%	16%	64%	34%	88%	41%	64%	55%	70%
राहु	16/01/2013	61%	0%	28%	55%	81%	52%	70%	80%	52%
गुरु	16/01/2029	80%	16%	58%	34%	94%	16%	64%	67%	64%
शनि	17/01/2048	61%	0%	28%	61%	81%	52%	77%	73%	52%
बुध	16/01/2065	80%	0%	52%	67%	81%	52%	64%	67%	64%
केतु	17/01/2072	61%	0%	58%	55%	81%	52%	52%	55%	77%
शुक्र	17/01/2092	61%	0%	52%	61%	81%	58%	70%	73%	70%
सूर्य	16/01/2098	86%	16%	58%	55%	88%	16%	52%	55%	52%
चंद्र	18/01/2108	80%	28%	52%	61%	81%	41%	64%	55%	52%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए पुखराज रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है।

पुखराज आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

इसे धारण करने से आपके जीवन में विशेष ऊर्जा का प्रवाह होगा। आपकी प्रतिभा बढ़ेगी। इस रत्न को धारण करने से आपके रुके हुए कार्य बन सकते हैं। स्वास्थ्य व सुख सम्पत्ति का लाभ मिल सकता है। आपको कार्य करने पर जो श्रेय नहीं मिल पाता है वह प्राप्त होने लगेगा। इस रत्न को धारण करने से आपको कुछ ही समय में सुख की अनुभूति होगी। अतः यह रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के जीवन पर्यन्त धारण करें तो लाभ होगा।

आपके लिए माणिक्य, गोमेद, नीलम, लहसुनिया, पन्ना एवं मूंगा रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

हीरा रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परीक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

मोती पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु षष्ठ भाव में स्थित है। आपको गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न आपकी शारीरिक प्रकृति को अच्छा रख, आपको निरोगी बनायेगा। आप मधुरभाषी और सदाचारी बनेंगे। रत्न धारण से आप पराक्रमी, विवेकवान और उदार बनेंगे। एवं रत्न शुभता से आप अच्छे कर्म करने वाले, लोकमान्य और प्रतापी बनेंगे। पुखराज रत्न प्रभाव से आप शत्रुहंता और अजात शत्रु होंगे। यह रत्न आपको वाद-विवाद में भी विजयी करेगा। पुखराज शुभता से भाई-बहनों और मामा सुख मिलेगा। रत्न प्रभाव से आपको अच्छे नौकर चाकर मिलेंगे।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में गुरु लग्नेश एवं चतुर्थेश है। गुरु आपके लिए विशेष शुभ ग्रह है अतः आप गुरु रत्न पुखराज धारण कर गुरु की पूर्ण शुभता प्राप्त कर सकते हैं। पुखराज रत्न धारण से आपको स्वास्थ्य बेहतर होगा। आपके रोगग्रस्त होने की संभावनाएं कम हो सकती हैं। पुखराज रत्न आपको प्रसन्नचित्त, विवेकी, विनम्र और सौम्य स्वभाव का स्वामी बनाएगा। रत्न प्रभाव से आप धर्म, दया, सेवा विषयों से जुड़ेंगे। पुखराज रत्न चतुर्थेश का रत्न होने के कारण आपको माता सुख, भूमि-भवन का सुख, संतान से पूर्ण सुख, विद्वान, गुणी, मनोवांछित जीवनसाथी, धर्मपरायण, धनी एवं यशस्वी बना सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ॐ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य तीसरे भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न धारण से आपके पराक्रम, प्रताप एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। यह रत्न आपकी कठोरता और अनुशासनप्रियता में कमी करेगा। आपको उदार, हितकारी बनाने में सहयोग करेगा। इसकी शुभता से आप धैर्यवान, पुरुषाधी एवं स्वाभिमानी गुणों से परिपूर्ण होंगे। माणिक्य रत्न आपकी आत्मा व चित्त की शुद्धि करेगा। भाई-बहनों का प्रियजन बनायेगा। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में सूर्य दशम भाव के स्वामी है। सूर्य के बेहतर फल प्राप्त करने के लिए आप सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर सकते हैं। माणिक्य रत्न आपका भाग्य

रत्न है। यह रत्न आपको भाग्य का अनुकूल सहयोग देगा। माणिक्य रत्न धारण कर आप आत्मिक रूप से बली हो सकते हैं। यह रत्न आपको शक्तिशाली कर सकता है। आप धर्मपरायण की ओर उन्मुख होंगे। आपकी सुरुचि धार्मिक गतिविधियों की ओर हो सकती है। माणिक्य रत्न आपके वैवाहिक सुख के सुखों में वृद्धि करेगा। आपको व्यापार में उन्नति देगा।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्नी से लेकर ८ रत्नी तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ हैं तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु तीसरे भाव में स्थित है। आप राहु रत्न गोमेद धारण करें। इस रत्न को धारण करने से आपके पराक्रम भाव को बढ़ाएंगे। शत्रु आपसे भयभीत रहेंगे। गोमेद रत्न सकारात्मक विचारधारा बनाये रखेगा। रत्न के प्रभाव से आप प्रभावशाली व्यक्तित्व के स्वामी होंगे। पराक्रम व बल की बढ़ोतरी होगी। प्रवास के कार्यों में सफलता मिलेगी। मनोकूल पद की प्राप्ति होगी एवं उत्तरोत्तर उन्नति होगी। आप धर्म-कर्म की गतिविधियों में रुचि लेंगे। गोमेद रत्न आपके लिए शुभदायक है।

राहु कुम्भ राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि प्रथम भाव में स्थित है। अतः गोमेद धारण करने से आप शत्रुओं के बल को नष्ट कर उन पर विजय प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको अत्यन्त साहसी और विपुल पराक्रमी बनाएगा तथा रत्न शुभता आपको अपने कुल में मुख्य प्रतापी बनाएगी। आप भूमि का संचय करेंगे। स्वास्थ्य सुख को यह रत्न बेहतर करेगा। जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए आपके द्वारा गलत तरीकों का प्रयोग हो सकता है। यह रत्न आपको दृढ़-निश्चयी एवं अधिक बोलने वाला बनाएगा। रत्न शुभता आपकी चातुर्य शक्ति को बढ़ा रही है। इसे धारण करने पर आपका दाम्पत्य जीवन सुखद होगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान कराएँ। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम ४ रत्नी और अधिकतम ८-१० रत्नी होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि लग्न भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। शनि रत्न नीलम आपकी परिश्रम क्षमता एवं कार्यकुशलता में वृद्धि करेगा। सरकारी पक्ष व पिता से सहयोग प्राप्त होगा। प्रथम भाव में स्थित शनि की दृष्टि तृतीय, सप्तम एवं दशम भाव पर आ रही है। शनि रत्न नीलम की शुभता से भाग्योदय, सम्मान एवं लाभ की प्राप्ति होगी। जीवन साथी से सहयोग प्राप्त होगा। भाई-बंधुओं से सुख-स्नेह प्राप्ति में भी यह रत्न सहयोग करेगा। नीलम रत्न आपके पुरुषार्थ भाव में वृद्धि कर रहे हैं।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में शनि दूसरे भाव एवं तीसरे भाव के स्वामी है। शनि शुभता प्राप्ति के लिए आप शनि रत्न नीलम धारण कर सकते हैं। नीलम रत्न आपकी शरीर की अस्वस्थता को दूर करने का प्रयास कर सकता है। नीलम रत्न की शुभता से आपको धन व परिवार का सुख प्राप्त होता रहेगा। यह रत्न आपके पराक्रम भाव को बढ़ाएगा। मित्र बंधुओं का सहयोग पाने के लिए भी आप नीलम रत्न धारण कर सकते हैं। नीलम रत्न की शुभता से आपको कार्यक्षेत्र में अनुकूल परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। यह रत्न सरकारी क्षेत्रों से जुड़े कार्यों के मध्य आने वाली बाधाओं में कमी कर सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्नी, अन्यथा 5-6 रत्नी का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु नवम भाव में स्थित है। केतु रत्न लहसुनिया धारण करना आपके लिए शुभ रहेगा। यह रत्न धारण से आपके पराक्रम भाव में वृद्धि होगी। रत्न शुभता से आप उदार और दयालु बनेंगे। लहसुनिया रत्न आपके भाग्य को बढ़ा सकता है। इस रत्न को धारण कर आप नैतिकता से धन लाभ कमाने का प्रयास करेंगे। रत्न प्रभाव सहोदर या भाईयों से आपके संबंध मजबूत करेगा। लहसुनिया रत्न शुभता से आप के पिता के सुख में भी यह रत्न बढ़ाएगा। लहसुनिया रत्न प्रभाव से आपको विदेश स्थानों से धनागमन प्राप्ति के योग बनेंगे।

केतु सिंह राशि में स्थित है व इसका स्वामी सूर्य तीसरे भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया धारण करने से आप बुद्धि और पराक्रम दोनों का प्रयोग कर सफलता पाने का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको परम प्रतापी और अत्यन्त प्रभावशाली बनाएगा। आपको सब प्रकार के सुखों से युक्त करेगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको भाई बहनों का सुख प्राप्त होगा। यह रत्न आपके भाग्योदय में सहायक बन आपको अत्यधिक धन प्राप्त करने के अवसर दे सकता है। रत्न शुभता आपके अरिष्टों का नाश करेगी। एवं यह रत्न आपको दृढ़-विवेकी, योगाभ्यासी बनाएगा और आप विद्वान और तीव्र स्मरण शक्ति के स्वामी होंगे।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ॐ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार हैं- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध द्वितीय भाव में स्थित है। इसलिए आपके लिए बुध रत्न पन्ना धारण करना उत्तम फलदायक रहेगा। पन्ना रत्न धारण करने से आपकी नियोजन क्षमता बेहतर होगी। आपकी कार्य योजनाएं सुव्यवस्थित होंगी। रत्न पन्ना आपकी वाकशक्ति, धन, विद्या, कुटुम्ब सुख की वृद्धि करेगा। सभा में अपनी बात कहने की योग्यता का विकास होगा। इसे धारण करने पर आप लोगों को अपनी बातों से प्रभावित करने में सफल हो पायेंगे। रत्न पन्ना आपको सुविचारक या वक्ता बनाने में सहयोग करेगा। बुद्धि से धनार्जन में पन्ना रत्न उपयोगी साबित होगा।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में बुध सप्तमेश एवं दशमेश है। आप बुध रत्न पन्ना धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न आपको बुद्धिमान और विनोदी प्रवृत्ति दे सकता है। यह रत्न आपको राज्य एवं आजीविका क्षेत्र में बौद्धिक योग्यता से सफलता प्राप्ति दे सकता है। कार्यक्षेत्र में उन्नति और लाभ देने के साथ साथ पन्ना रत्न आपको सहयोगियों से संबंध मधुर कर सकता है। पन्ना रत्न धारण कर आप ससुराल से धन प्राप्ति के योग बना सकता है। बुध रत्न पन्ने की शुभता आपको धन, यश भी दे सकती है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूठी में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं

जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल षष्ठ भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपकी सभी इच्छाओं की पूर्ति करेगा। आप क्रोध पर नियन्त्रण रखने में सफल होंगे और आप तीक्ष्ण बुद्धि के स्वामी होंगे। रत्न प्रभाव से आप अपने विरोधियों को पराजित करेंगे। मूंगा रत्न की शुभता आपमें धैर्य शक्ति का विकास करेगा। नौकरी के क्षेत्र में आपकी नेतृत्व शक्ति का विकास होगा। यह रत्न आपकी विवेकशक्ति में बढ़ोतरी करेगा। व्यवसाय की जगह आप नौकरी करने को अधिक वरीयता देंगे। आप अपने व्यर्थों को नियंत्रित रख पायेंगे।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में मंगल पंचमेश एवं द्वादशेश है। मंगल रत्न मूंगा आपके लिए शुभ रत्न है। मूंगा रत्न धारण करने से नौकरी में बदलाव करना आपके लिए सहज हो सकता है। मूंगा रत्न आप सदाचारी, बुद्धिमान एवं विनम्र हो सकते हैं। रत्न आपको जीवनसाथी से लाभ, पिता की धार्मिक आस्था, पिता की विदेश यात्रा, कोर्ट-कचहरी के फैसलों में आपके अनुकूल फल प्राप्त करा सकता है। इस रत्न की शुभता आपको संतान से सुख, शयन सम्बन्धी परेशानियां एवं समझौते आपके पक्ष में हो सकते हैं।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र तीसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शुक्र रत्न हीरा आपके उत्साह, विनम्रता और व्यवहार

कुशलता में कमी कर सकता है। यह रत्न आपकी वाणी की मधुरता में भी कमी ला सकता है। हीरा रत्न प्रभाव से आपको कला और यात्राओं में सुख की कमी करा सकता है। आपके वैवाहिक जीवन में कुछ विसंगतियां आ सकती है। वैवाहिक जीवन में निष्ठावान बने रहकर आप अपने वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाए रख सकती है। हीरा रत्न आपके धन लाभ और संपन्नता में कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपकी संकल्पशक्ति भी आंशिक रूप से प्रभावित हो सकती है। विवाह में विलम्ब भी यह रत्न आपको दे सकता है।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में शुक्र एकादशेश एवं षष्ठेश है। षष्ठेश शुक्र का हीरा रत्न आपको रोग, ऋण एवं शत्रुओं से कष्ट दे सकता है। इसे पहनने के बाद अपमान, चिंता, शंका, पीड़ा एवं असत्य भाषा की प्रवृत्ति आपमें जन्म ले सकती है। एकादश भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण हीरा आपमें लोभ, स्वार्थ एवं बेईमानी के अवगुण आ सकते हैं। यह रत्न आपके मामा-मौसी से सुखों में कमी दे सकता है। शत्रुओं को परास्त करने में आपको सामान्य से अधिक मेहनत करनी पड़ सकती है। शुक्र रत्न हीरा प्रभाव से आपको पिता से अल्पसुख प्राप्त हो सकता है। राज्य व कार्यक्षेत्र से अल्प लाभ व सम्मान न्यून मिलता है। हीरा रत्न आपको रोग एवं ऋण की समस्याएं दे सकता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र द्वितीय भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र का मोती रत्न आपको नवीन काम धंधों में प्रतिकूल फल दे सकता है। मोती रत्न प्रभाव से विषय वासना के प्रति आपकी रुचि अधिक हो सकती है। अपनी पसंद के अनुरूप स्वादिष्ट भोजन का अनुभव आपको करना पड़ सकता है। धन बचाना आपके लिए सरल नहीं हो पाएगा। रोजगार प्राप्ति और प्रारम्भिक शिक्षा में व्यवधान आ सकते हैं। रत्न की अनुकूलता प्राप्त न होने के कारण आपका आर्थिक पक्ष प्रभावित हो सकता है। पारिवारिक कुटुंब के संबंधों में उत्तार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। वाणी दोष की स्थिति भी बन सकती है। वाणी में मधुरता की कमी भी आपको हो सकती है।

आपकी धनु लग्न की कुंडली में चंद्र अष्टम भाव के स्वामी है। अष्टमेश चंद्र का मोती रत्न धारण करना आपके लिए कष्टकारी हो सकता है। मोती रत्न आपके रोगों में वृद्धि एवं आयु में कमी दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपको गहरे जल से कष्ट का भय हो सकता है। मोती रत्न आपको नकारात्मक विचारधारा के साथ मानसिक चिंताएं भी अधिक दे सकता है। इस रत्न को पहनने के बाद आप आर्थिक संकटों के कारण दरिद्रता की स्थिति में पहुंच सकते हैं। मोती रत्न की प्रतिकूलता आपको दुर्भाग्य और ससुराल पक्ष से संबंध खराब कर सकती है। यह रत्न आपके जीवन के सुखों में कमी कर दुःखों में वृद्धि कर सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपको जल के कारण होने वाले रोग हो सकते हैं।

दशानुसार रत्न विचार

गुरु
(16/01/2013 - 16/01/2029)

गुरु की दशा में आपका पुखराज व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, नीलम, लहसुनिया व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और मोती व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(16/01/2029 - 17/01/2048)

शनि की दशा में आपका पुखराज व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, माणिक्य, पन्ना, हीरा व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(17/01/2048 - 16/01/2065)

बुध की दशा में आपका पुखराज व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, गोमेद, नीलम, लहसुनिया, मूंगा व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(16/01/2065 - 17/01/2072)

केतु की दशा में आपका पुखराज व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, मूंगा, पन्ना, गोमेद, हीरा व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल

प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(17/01/2072 - 17/01/2092)

शुक्र की दशा में आपका पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, नीलम, लहसुनिया, माणिक्य, पन्ना, हीरा व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(17/01/2092 - 16/01/2098)

सूर्य की दशा में आपका पुखराज व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, पन्ना, गोमेद, नीलम व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

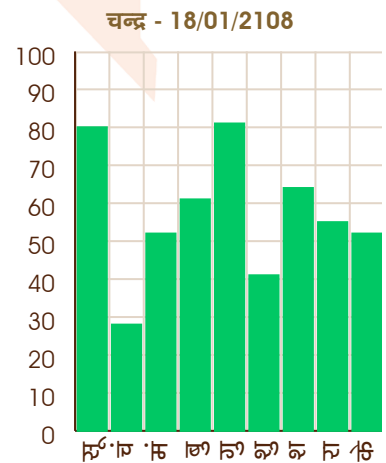
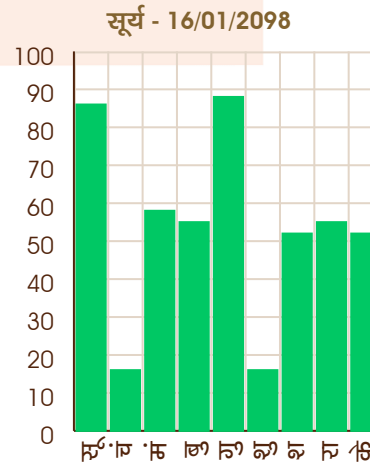
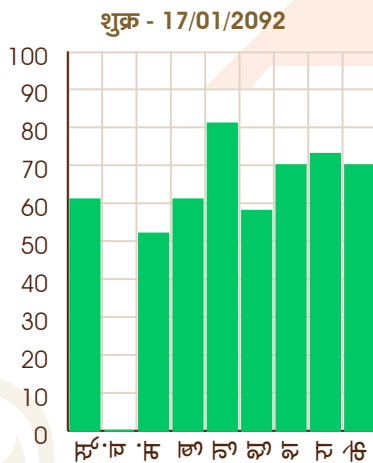
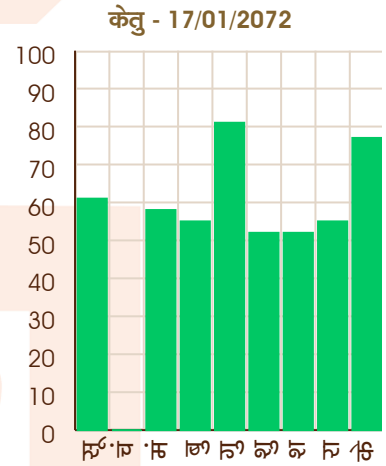
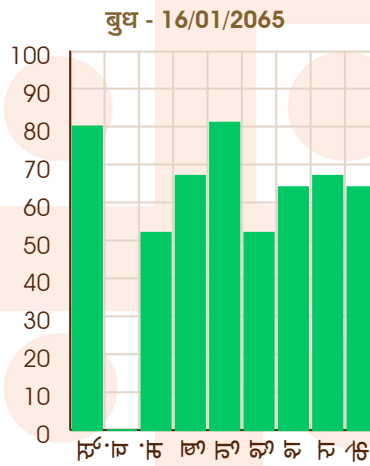
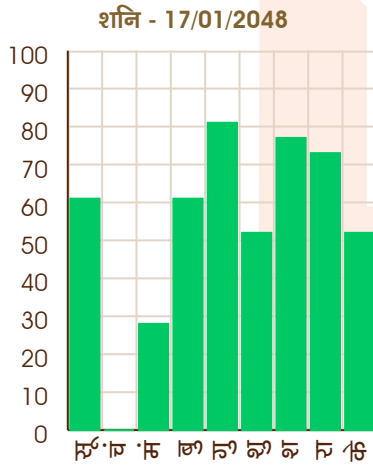
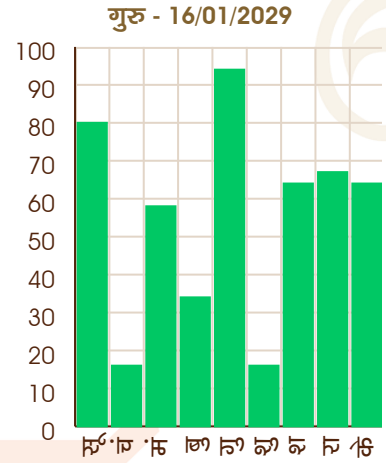
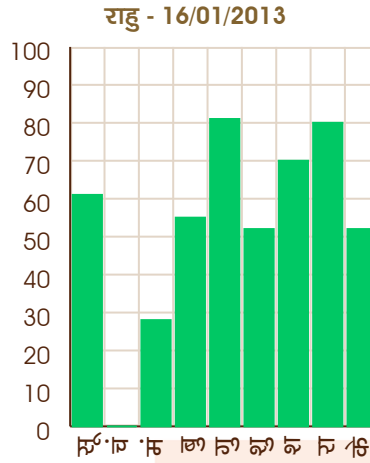
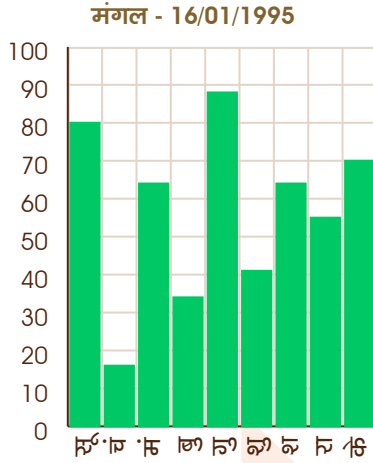
चन्द्र
(16/01/2098 - 18/01/2108)

चन्द्र की दशा में आपका पुखराज व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, पन्ना, गोमेद, मूंगा व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा व मोती रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ



FUTUREPOINT
Astro Solutions

